SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

युवा संस्कृति पर सोशल मीडिया के बदलते प्रतिमानः समाजशास्त्रीय विश्लेषण

पवन कुमार, (Ph.D., PDF Scholar, ICSSR)
दिनेश कुमार सिंह, Ph. D., (पूर्व आचार्य) समाजशास्त्र विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
पवन कुमार, Ph. D.
दिनेश कुमार सिंह, Ph. D.
E-mail : pawan.kumar11@bhu.ac.in

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/09/2024
Revised on : 26/11/2024
Accepted on : 05/12/2024
Overall Similarity : 01% on 27/11/2024

शोध सार

युवा किसी भी देश में सामाजिक बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाते हैं। संचार इस बदलाव में उपकरण की तरह कार्य करता है। वर्तमान में सोशल मीडिया ने पूरे वैश्विक परिदृश्य को प्रभावित किया है जिससे युवा संस्कृति एक उपसंस्कृति का निर्माण कर रहे हैं। वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य सोशल मीडिया से युवा संस्कृति में आए बदलाव का अध्ययन करना तथा साथ ही इस बदलाव से समाज की सकारात्मक और नकारात्मक लाभों का अध्ययन करना है। शोध प्रविधि हेतु द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। परिणामस्वरूप सोशल मीडिया ने युवा संस्कृति को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित किया है परंतु युवा के जीवन शैली पर आए बदलाव में सकारात्मक पहलू उभरे हैं जिससे युवाओं को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिली है। युवा ही राष्ट्र के निर्माण में सकारात्मक कदम उठाते हैं।

मुख्य शब्द

युवा संस्कृति, सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव, सोशल मीडिया.

प्रस्तावना

युवा को परिभाषित करना कठिन है, क्योंकि प्रत्येक संस्कृति के लिए अलग–अलग आयु वर्ग निर्धारित होते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने युवा को 15–24 वर्ष की आयु के व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया है परंतु यह परिभाषा सार्वभौमिक नहीं हैं (यूनेस्को)। विश्व युवा रिपोर्ट 2020 के अनुसार 15–24 वर्ष की आयु की 1.2 बिलियन युवा है जो वैश्विक आबादी का 16 प्रतिशत है। राष्ट्रीय युवा नीति (2014) भारत सरकार ने 15–29 आयु वर्ग को युवा के रूप में परिभाषित किया हैं। संस्कृति का तात्पर्य साझा मूल्यों, प्रथाओं और विश्वासों से संबंधित हैं। हसकोविट्ज

(1948) ने संस्कृति को परिभाषित करते हुए बताया कि "संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग हैं"। युवा संस्कृति शब्द पहली बार समाजशास्त्री टालकट परसंस (1942), उनके अनुसार युवाओं की अपनी एक संस्कृति होती है जो पहनावे की विशिष्ट तरीकों, भाषा, संगीत, खेल और रुचियां, विशिष्ट व्यवहार और जीवन शैली से पहचानी जाती है। युवाओं की पहचान, लिंग, वर्ग, जाति यदि से प्रभावित होती है जो विभिन्न युवा संस्कृतियों का निर्माण करते हैं।

सोशल मीडिया लोगों के बीच सामाजिक संपर्क है, जिसमें विश्व के लोग अपनी भावनाओं को साझा करते हैं। आभासी समुदायों और नेटवर्क में चित्रों विचारों इत्यादि का आदान–प्रदान करते हैं। कपलान और हेनलेन (2010: 61) के अनुसार, "सोशल मीडिया को 'इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों के एक समूह के रूप में परिभाषित किया गया है जो वेब 2.0 की वैचारिक और तकनीकी नींव पर निर्मित है, और जो उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री के निर्माण और आदान–प्रदान की अनुमति देता है।" पहले लोग सूचना प्राप्त करने हेतु समाचार चौनल रेडियो प्रिंट मीडिया का प्रयोग करते थे परंतु वर्तमान में सोशल मीडिया ने संपर्क हेतु क्रांति ला दी है जिसने लोकतांत्रिक भागीदारी बढ़ाने में योगदान दिया है। मूल रूप से सोशल मीडिया चार प्रकार के होते हैं:

1. **सामाजिक नेटवर्क:** यह लोगों को अपने दोस्तों से जोड़ने और सामग्री को साझा करने के लिए अनुमति देता है। उदाहरण फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि।
2. **ब्लॉग:** एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे नियमित रूप से अपडेट किया जाता है और यह एक ऑनलाइन व्यक्तिगत पत्रिका या डायरी इस संग्रह के रूप में परिभाषित किया है।
3. **विकीपीडिया:** एक्साइड लोगों को सामग्री जोड़ने या संपादित करने की अनुमति देती है।
4. **पॉडकास्ट:** यह भी फाइल है जो सदस्यता के माध्यम से उपलब्ध होती हैं।

सोशल मीडिया का विश्व एवं भारत में उपयोग ग्लोबल सामाजिक मीडिया सांख्यिकी शोध सारांश 2023 विश्व में सोशल मीडिया का 60 प्रतिशत लोग प्रयोग कर रहे हैं जिस पर औसत समय 2 घंटे 24 मिनट का है जबकि भारत में डाटा रिपोर्ट 2023 के अनुसार 467.0 मिलियन लोग उपयोग कर रहे हैं। विभिन्न सोशल प्लेटफॉर्म का भारत में प्रयोगकर्ता इस प्रकार है: सर्वाधिक यु–ट्यूब– 467.० मिलियन, फेसबुक 314.6 मिलियन, इंस्टाग्राम 229.6 मिलियन, फेसबुक मैसेंजर 117.6 मिलियन, लिंकडइन 99.0 मिलियन, ट्विटर 27.25 मिलियन है।

साहित्य की समीक्षा

सिंह ममता, (2024), सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव और चुनौतियां आलेख में बताया की प्रत्येक व्यक्ति की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता अधिकार को सोशल मीडिया ने नया आयाम दिया हैं। व्यक्ति बिना किसी डर के इसके माध्यम से अपनी बात रख सकता है और उसे देश ही नहीं विश्व की किसी भी कोने में पहुंचा सकता है परंतु नकारात्मक पहलू यह है कि सोशल मीडिया पर समाज विरोधी कार्यों का भी प्रयोग बढा है जिसका गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। साइबर सुरक्षा और सोशल मीडिया के दुरुपयोग का मुद्दा ऐसा है जिसकी और अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। आज सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स के जरिए गलत विचारों की साझा करने से देश की आंतरिक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

खातनवाल नेहा कुमारी (2023), सोशल मीडिया विकास या विनाश– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन में बताया की युवा वर्ग में लगभग 25.8: युवा हर वक्त इंटरनेट पर मौजूद रहते है। 16.1 प्रतिशत युवा अपने सारे महत्वपूर्ण पलों को ऑनलाइन दोस्तों के साथ साझा करते हैं। 25.8 प्रतिशत सोशल मीडिया के अत्यधिक इस्तेमाल से नकारात्मक प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। 19.4 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि सोशल मीडिया ने उनके शिक्षा के स्तर को घटाया हैं जबकि 11.3 प्रतिशत युवा सोशल मीडिया पर जब होते हैं तो उन्हें भूख–प्यास का एहसास नहीं होता। 16.1 प्रतिशत युवा सोशल मीडिया को इस्तेमाल नहीं करने पर बुरा महसूस करते हैं जबकि 8 प्रतिशत युवा परिवार के नाराज होने पर भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं छोड़ते। दूसरी ओर आयु वर्ग की

बात करें तो चाहे 10 साल का बच्चा हो या फिर 30 साल का युवा सभी सोशल मीडिया के इस्तेमाल में से बखूबी वाकिफ है। शहरो की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों के युवा सोशल मीडिया का अत्याधिक मात्रा में इस्तेमाल करते हैं। सोशल मीडिया एडिक्शन में पुरुषों में 46 प्रतिशत और महिलाओं में 43.84 प्रतिशत है।

सिंह सीमा (2023), "सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव'' निजता, पहचान, और डिजिटल विभाजन के पहलुओं का विश्लेषण" की आलेख में बताया कि सोशल मीडिया और डिजिटल समाज ने आधुनिक जीवन को कई तरीकों से प्रभावित किया है जिससे डिजिटल विभाजन की समस्या उत्पन्न हुई है।

प्रतिभा देवी, (2023), युवाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर एक अध्ययन में बताया कि 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रयोग किया जबकि अन्य विश्व शिक्षक ने दोस्तों से जुड़े रहने का लाभ लिया, 28 प्रतिशत मनोरंजन और मस्ती जैसे लाभ लिए। 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं को नौकरी के अवसर की तलाश में लाभ मिला अर्थात् सोशल मीडिया स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी बन रहा है और हमारी संस्कृतियों को भी प्रभावित कर रहा है।

मीना रामकल्याण (2023), सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव आलेख में दिखाया कि सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से सोशल मीडिया ने प्रभावित किया है। यदि सोशल मीडिया के नकारात्मक पक्ष को हम देखें तो इसके बुरे इस्तेमाल मिलते हैं जबकि एक संतुलित जीवन परिवार समाज संस्कृति और देश के लिए सोशल मीडिया के दोनों पक्षों पर हमें खुले मन से विचार करना चाहिए।

सिंह अरविंद कुमार (2019), सोशल मीडिया का वर्तमान परिदृश्य उपयोगिता एवं प्रभाव– अनुशीलन आलेख में बताया कि भारत में युवाओं के बीच में सोशल मीडिया की लोकप्रियता काफी अधिक है। भारत में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, युटुब जैसे सोशल मीडिया काफी लोकप्रिय हैं। युवाओं में फेसबुक सबसे अधिक लोकप्रिय है, इंस्टाग्राम यूट्यूब भी काफी लोकप्रिय है, राजनीतिक शिक्षा और मनोरंजन के लिए भारतीय युवा इसका अधिक प्रयोग करते हैं। युवाओं द्वारा फोटो सबसे अधिक पोस्ट किया जाता है। इसके बाद लिखित सामग्री का स्थान है, वीडियो और ऑडियो जैसे सामग्री अपेक्षाकृत कम पोस्ट की जाती हैं। इसके माध्यम से वे अपनी भावनाओं और विचारों को आदि पोस्ट करते हैं, कमेंट करते हैं। इसके अतिरिक्त युवा इस पर अपने मित्रों को ढूंढने के लिए और अपने अन्य कार्यों के लिए भी प्रयोग करते हैं। युवा वर्ग एक निश्चित समय पर इस्तेमाल करने के बजाय उसे बार–बार खोलने और बंद करते हैं। अधिकतर युवा प्रतिदिन 1 घंटे से लेकर 3 घंटे तक सोशल मीडिया पर देते हैं।

नरूका संतोष (2018), सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव आलेख में बताया कि सोशल मीडिया ने युवाओं की पूरी जीवन शैली को प्रभावित किया है जिसमें रहन–सहन, खानपान, वेशभूषा और मूल सभी समग्र रूप से शामिल हैं। पान और धूम्रपान उन्हें एक फैशन का ढंग लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में यह कारण मुख्य रूप से हैं। आपसी रिश्ते नातो में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसका एक नकारात्मक परिणाम है।

कुशवाहा राहुल और गांधी सुषमा (2018), सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका एक अध्ययन में बताया कि 67 प्रतिशत उत्तरदाता ने सामाजिक विकास को सोशल मीडिया की देन माना। 73 प्रतिशत शिक्षार्थी सामाजिक विकास से संबंधित सूचनाओं को अपने दोस्तों के साथ साझा करते हैं। 83 प्रतिशत लोगों का कहना है कि शिक्षा में सुधार सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है और सोशल मीडिया के उपयोग से शिक्षा में काफी बदलाव आया हैं। 12 प्रतिशत लोग सामाजिक माध्यमों के दुरुपयोग से चिंतित हैं, जो युवा वर्ग को सामाजिकता की ओर प्रोत्साहित कर रहा है। 27 प्रतिशत विद्यार्थी गांव से शहरी क्षेत्र की ओर पलायन को रोकना चाहते हैं, वहीं 15 प्रतिशत अब भावुक गांव की सुविधाओं पर्याप्त बताते हैं।

वासनिक बोरकर हेमलता (2017), सामाजिक मीडिया का भारतीय समाज पर प्रभाव आलेख में बताया कि सोशल मीडिया समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव डाल रहा है, लेकिन यह प्रभाव युवाओं पर नकारात्मक एवं सामान्य आयु समूह की व्यक्तियों पर सकारात्मक हो रहा है।

श्रीवास्तव मुकुल और सुरेंद्र कुमार (2017), सोशल मीडिया और युवा विकास शोध आलेख में बताया कि लोग किसी भी सूचना को लेकर सोशल साइट्स के माध्यम से अपनी टिप्पणी दे रहे हैं। सूचना को युवा तुरंत सोशल नेटवर्किंग साइट पर साझा करते नजर आते हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं के विकास से संबंधित (स्वास्थ्य, शिक्षा, कैरियर, योजना) इत्यादि जानकारी के लिए बेहतर सुविधा प्रदान कर रहे हैं जहां युवाओं को विकास की सकारात्मक जानकारी ही नहीं होती, बल्कि इसके अलावा कई प्रकार के अन्य सूचनाओं भी मिलती है।

जोशी पूनम (2015), आलेख, सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका के अध्ययन में बताया कि मीडिया और सामाजिक जीवन के बीच गहरा संबंध है। गिडेंस के अनुसार आधुनिक समाज में जनसंचार के साधन मूलभूत भूमिका निभाते हैं। समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, इंटरनेट, सोशल सोशल साइट इत्यादि जो वृहद जन तक पहुंचने में, सहायक है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है:

1. सोशल मीडिया से युवा संस्कृति में आए बदलाव का अध्ययन करना।
2. युवा संस्कृति में आए परिवर्तन से समाज के सकारात्मक और नकारात्मक लाभों का अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया हैं। द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते हुए अंतवर्तस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया।

विश्लेषणात्मक व्याख्या और परिणाम

द्वितीयक स्रोतों, प्रकाशित पत्र आलेख, संबंधित पुस्तकों के संदर्भ के आधार पर उद्देश्यानुसार विश्लेषण और व्याख्या प्रस्तुत किया गया है।

सोशल मीडिया से युवा संस्कृति में आए बदलाव का अध्ययन

परंपरागत समाज में जीवन शैली सामान्य तरीके से थी परंतु आधुनिक समाज और विशेषकर तकनीक समाज ने एक नई जीवन शैली को जन्म दिया। विशेषकर युवा में आज का युवा पहनावे की विशिष्ट तरीकों का प्रयोग करता है। पाल और उइके (2017) ने अपने अध्ययन में बताया कि युवाओं के जीवन शैली पर सोशल मीडिया का प्रभाव ड्रेसिंग स्टाइल पर हुआ है। शर्मा और शुक्ला (2016) ने ग्वालियर मध्य प्रदेश के अपने अध्ययन में बताया कि सोशल मीडिया ने युवाओं की जीवन शैली और संस्कृति विशेषकर शिक्षा में प्रतिकूल प्रभाव डाला है जिससे उनकी भाषा, वर्तनी, कौशल और वाक्य के निर्माण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा हैं। युवा अपने महत्वपूर्ण समय को परिवार के साथ ना बिता कर सोशल मीडिया नेटवर्क पर बिता रहे हैं जिसका परिणाम मनोवैज्ञानिक समस्या के रूप में उभरी है। युवा के व्यवहार के तरीके बदल रहे हैं। इस संदर्भ में जैन और यादव (2019) जयपुर शहर के अध्ययन में पाया गया कि समकालीन समाज में सोशल मीडिया युवाओं के जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाता है जिससे कि युवाओं में एक उपसंस्कृति का जन्म हो रहा है।

युवा संस्कृति में आए परिवर्तन से समाज को सकारात्मक और नकारात्मक लाभ

कोई भी समाज बिना अंतःक्रिया के विकसित नहीं हो सकता। अंतः क्रिया दो व्यक्तियों के बीच या दो समूहों के बीच या दो से ज्यादा समूह के बीच हो सकती है। अंतःक्रिया करने का एक माध्यम संचार भी है। उन्नत तकनीकी ने संचार के लिए सोशल मीडिया को जन्म दिया जिसने पूरे वैश्विक समाज को प्रभावित किया। मीडिया विशेषज्ञ मार्शल मैक्लुहान ने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने एक "ग्लोबल विलेज" का निर्माण किया है। इस शब्द को मीडिया विशेषज्ञ कनाडाई सिद्धांतकार मार्शल मैक्लुहान ने अपनी पुस्तक द गुटेनबर्ग गैलेक्सीः द मेकिंग ऑफ़ टाइपोग्राफिक मैन (1962) और अंडरस्टैंडिंग मीडिया (1964) में गढ़ा था। उन्होंने अपनी अवधारणा को दुनिया भर में व्यक्तिगत अंतःक्रिया और परिणामों को शामिल करने की दिशा में आगे बढ़ रहे लोगों की समझ पर आधारित किया। राडवान, (2022) बामहा गांव मिश्र के अपने अध्ययन में बताया कि सोशल मीडिया के उपयोग से सांस्कृतिक

पहचान में परिवर्तन का उच्च स्तर प्रदर्शित किया है। एजंग और बरुश (2023) जिला कोहिमा के अध्ययन में दिखाया कि सोशल मीडिया युवाओं के व्यक्तित्व विकास को कैसे प्रभावित करता है। मीर और गुल (2022) की अपने अध्ययन में बताया कि सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव युवाओं के व्यक्तित्व में पड़ता है। उन्होंने बताया कि युवाओं की गतिविधियों पर माता–पिता को नियमित जांच करनी चाहिए। जोधपुर जिले के नगरीय अध्ययन में मीना मीनाक्षी (2022) ने बताया कि युवा औसतन प्रतिदिन दैनिक जीवन में लगभग 1 से 2 घंटे समय व्यतीत करते हैं। इस प्रकार निम्न अध्ययन में प्रदर्शित होता है कि आज का युवा सोशल मीडिया का प्रयोग अपने लाभो के लिए करता है परंतु लाभों के साथ–साथ इसका नकारात्मक प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ता है। सिडनी की यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी कि सोशल मीडिया के इस्तेमाल से लगभग 46 हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं जो मानसिक रूप से प्रभाव डालते हैं (हिंदी न्यूज़ 2021)।

निष्कर्ष

21वीं सदी में सोशल मीडिया जनसंचार का एक ऐसा माध्यम बनकर उभरा है जो पूरे विश्व को एक छत के नीचे ला दिया है। विकसित देशों की संस्कृति आज विश्व के हर एक देश में देखी जा सकती है। दूसरी तरफ विकासशील देशों की संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान पर लोगों द्वारा अपनाई जा रही हैं। खाने–पीने की संस्कृति, पहनावे की संस्कृति, आवास की संस्कृति, भाषा, संगीत, खेल और व्यवहार की संस्कृति, ने युवाओं को सकारात्मक लाभ पहुंचाया है। युवाओं के लिए सोशल मीडिया एक ऐसा मंच हो गया है जहां से युवा अपनी दैनिक गतिविधियों, व्यवसाय, सामाजिक रिश्तों, विचारों, भावनाओं, को प्रदर्शित कर रहा है। युवा समाज में सामाजिक परिवर्तन की एक शक्ति के रूप में कार्य करता है जिसका गहरा प्रभाव सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों पर पड़ता है।

संदर्भ सूची

1. Eugenia Siapera (2018) Understanding New Media, 2nd edition, Sage Publications Ltd.
2. एजुंग, एस., और बख्श, एस. ए. (2023) कोहिमा जिले में युवाओं के व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव। *फार्मास्युटिकल नकारात्मक परिणाम जर्नल,* वॉल्यूम 14, इश्यू 02, पृ. 2178–2184।
3. कल्याण राम (2023) "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव" *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस इन्वेंशन (आईजेएचएसएसआई)* आईएसएसएन (ऑनलाइन) 2319–7722, आईएसएसएन (प्रिंट) 2319–7714ए www.ijhssi.org, वॉल्यूम 12 अंक 3, मार्च, 2023, पी. 107–113।
4. कुशवाहा राहुल और गांधी सुषमा 2018 सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका एक अध्ययन, *हिंदी शोध का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल,* खंड 4; अंक 1; पृ. 20–23।
5. खंतवाल नेहा, (2023) सोशल मीडिया विकास या विनाश का विश्लेषण, *इंटरनेशनल जनरल ऑफ नॉवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट,* खंड 8, अंक 5, पृ. d717-d724।
6. जैन प्रकृति और यादव निशा (2018), समाजशास्त्रीय अध्ययन में सोशल मीडिया और युवा उपसंस्कृति, *IISUniv.J.S.Sc.* खंड 7 और 8(1), पृ. 146–162।
7. डिजिटल ग्लोबल ओवरव्यू रिपोर्ट 2023।
8. देवी प्रतिभा (2023) "युवाओं पर शोषण मीडिया के प्रभाव पर एक अध्ययन" *इंटरनेशनल जनरल आफ होम साइंस,* ISSN:2395–7476, 9(3), पृ. 197–201।
9. नरूका संतोष और शर्मा विजय लक्ष्मी (2018) 'सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव" विश्व भारती संस्थान लाडनूं नागौर, *IJCRT,* Volume 6, Issue 1, January 2018, ISSN: 2320-2882, p. 292-296.
10. मीनाक्षी मीना (2022) "वर्तमान समय में युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभावः एक समाजशास्त्री अध्ययन" *राजस्थान जनरल ऑफ सोशियोलॉजी,* वॉल्यूम 14, अक्टूबर, आईएसएसएन 2249 –9334,

वाल्यूम 14, इश्यू 1, पृ. 130–137.

11. मीर अहमद जहूर और गुल शाज़ी मीर (2022) सोशल मीडिया और भारतीय युवाओं पर इसका प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है, *विज्ञान संचार और प्रौद्योगिकी में उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल,* खंड 2 अंक, पृ. 309–312।
12. मुस्तफा राडवान, (2022) ''ग्रामीण लोगों की सांस्कृतिक पहचान पर सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभावः बाम्हा गाँव, मिश्र का एक केस स्टडी,'' *पैलग्रेव कम्युनिकेशंस, पैलग्रेव मैकमिलन,* खंड 9(1), पृ. 1–14, दिसंबर।
13. मैक्लुहान मार्शल (1967) "द मीडियम ऑफ मैसेज" पेंगुइन बुक्स, वेस्टमिंस्टर शहर, लंदन, इंग्लैंड।
14. वासनिक हेमलता बोरकर (2017) "सोशल मीडिया का भारतीय समाज पर प्रभाव" *इंट. जे. रेव. और रेस. सामाजिक विज्ञान,* 5(1), जनवरी–मार्च, 2017; पृ. 07–11।
15. विद्या भूषण और सचदेवा आर. डी. (2020) *समाजशास्त्र के सिद्धांत,* किताब महल प्रकाशक, इलाहाबाद।
16. शर्मा, ए. और शुक्ला, ए.के. (2016) युवाओं पर सोशल मैसेंजर खासकर व्हाट्सएप का प्रभावरू एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एंड इनोवेटिव आइडियाज इन एजुकेशन,* 2, 367–372।
17. श्रीवास्तव मुकुल और कुमार सुरेंद्र (2017) सोशल मीडिया और युवा विकास, जोशी पुनम 2015 सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका सार AIJRA, वॉल्यूम 1, अंक 3, पृ. 37. 42।
18. सिंह कुमार अरविंद, (2019) सोशल मीडिया का वर्तमान प्रदेश उपयोगिता एवीएन प्रभाव एक अनुशीलन, *शोध संचयन,* खंड 10, अंक 2, पृ. 10.01–10.5।
19. सिंह ममता कुमारी, (2024) सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव और चुनौतियाँ, *बहुविषयक अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय जर्नल,* खंड 6, अंक 3, पृ. 1–4।
20. सिंह सीमा, (2023) सोशल मीडिया का समाज प्रति प्रभाव निजात पहचान और डिजिटल विभाग के पहलवान का विष्लेषण, *मानविकी और सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान जर्नल,* खंड 11 अंक 2, पृ. 287–259।
21. https://www.unesco.org/en/youth, Accessed on 10/09/2024.
22. https://yas.nic.in/documents/national-youth-policy-2014, Accessed on 10/09/2024.
23. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Global-village, Accessed on 08/09/2024.
24. https://datareportal.com/digital-in-india, Accessed on 14/09/2024.
25. https://www.livehindustan-com/lifestyle/story-scientists-warns-tell-the-dangerous-effects-of-social-media-addiction-4863080.html, Accessed on 12/09/2024.

****